

कहीं हम परवश तो नहीं ?

* ब्रह्माकुमार डॉ. अशोक जेठवा, अहमदाबाद (महादेव नगर)

दुनिया में कई देश और टापू ऐसे हैं जहाँ भौगोलिक स्थितियों और मौसम के कारण कई वस्तुओं का मिलना संभव नहीं है। उन्हें उन वस्तुओं का आयात करना पड़ता है, उनके लिए ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। इस प्रकार वे अन्य देशों पर निर्भर हैं अर्थात् परवश हैं।

कई बार हमें कार्य के लिए बाहर जाना होता है पर अन्य के वाहन के इन्तज़ार में हैं, हमें कोई विशेष कार्य करना है पर अन्य के सहयोग की अपेक्षा में हैं, स्वयं का कोई स्वभाव अच्छा नहीं लगता पर बदलने में स्वयं के अधीन हैं। बाढ़ और खराब मौसम के कारण हम प्रकृति के परवश हो जाते हैं। समय, स्वास्थ्य, संबंध, अज्ञानता से परवश व्यक्ति दबा-दबा रहता है। पर क्या परवशता आत्मा को अच्छी लगती है? नहीं, आत्म-निर्भर व्यक्ति ही स्वयं व समाज के लिए संपत्ति है। आइये, स्वयं में रही हुई परवशता को पहचानकर उसकी जंजीर से बाहर निकलें।

अन्य की शक्ति, सहयोग, सहकार के परवश

अन्य का सहयोग मिले, मदद मिले तभी मैं यह कर सकता/सकती



हूँ, यह भी परवशता है। सहयोग लेना बुरी बात नहीं है पर उन पर ही आधारित रहना जैसे अपने आप को अपंग बना देना है। पूरा ही कार्य कोई अन्य करके दे, यह बुद्धिमानी नहीं है। हाँ, जो हमें नहीं आता या कार्य को जल्दी करना है, ऐसे समय पर सहयोग लें, वह बात अलग है। हमारा जीवन किसी व्यक्ति पर आधारित न हो। हर एक की अपनी क्षमता है। हाँ, हम हज़ारों भुजाओं वाले परमात्मा पिता पर आधारित रह सकते हैं। पर वे भी कहते हैं, हिम्मत का एक कदम आप बढ़ाओ, मदद के हज़ार कदम मैं बढ़ाऊँगा। परमात्मा पिता का कहना है कि किसी दूसरे को स्वयं के ऊपर आधारित बनाना भी पाप है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की विशेषता है, अन्य को आप समान बनाना, अपने पर आधारित नहीं। फलस्वरूप, संस्था के 78 वर्ष पूरे होने पर भी परमपिता परमात्मा शिव का कार्य चलता आया है, चलता रहेगा। देखा गया है कि जहाँ संस्थापक ने अपने साथ रहने वालों, चलने वालों को अपने पर आधारित बना दिया, वहाँ संस्थापक के न होने पर वे असुरक्षित महसूस करते हैं। संस्था अपना कार्य आगे बढ़ाने में कमज़ोर महसूस करती है।

शारीरिक रूप से परवश

आत्मा शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति है। शरीर के ठीक न होने पर, साथ न देने पर जो परतन्त्रता महसूस करते हैं वह दर्दनाक है। स्वयं

के शरीर को ठीक रखना और मालिक बन इससे कार्य लेना भी आत्मनिर्भरता है।

परतन्त्रता है पाँच विकारों से

आज के समय में हर कोई किसी न किसी बात को लेकर परवश है। कोई मोबाइल, कम्प्यूटर, टी.वी., कार आदि के वश है। कोई किसी आदत जैसे चोरी करना, झूठ बोलना, गप्पे लगाना, समय बरबाद करना, गुस्से होना, व्यसन बरना, चिड़चिड़ापन, रुठ जाना, किनारा करना, ईर्ष्या करना आदि के वश है। कोई फिर स्वयं को मिल रही सुविधा या स्वयं की अपेक्षाओं के वश है। ये सभी परतन्त्रताएँ खतरनाक हैं।

कोई किसी की गलानि या कमी का वर्णन किए बिना रह नहीं सकते, कोई लोभवश वस्तु, व्यक्ति, साधन की ओर आकर्षित होकर न करने योग्य कर्म कर लेते हैं। ऐसे परवश व्यक्ति अपनी बुद्धि को जैसे ताला लगा देते, फिर सहमे-सहमे, दबे-दबे से रहते। स्वयं की निर्णय शक्ति का उपयोग नहीं कर पाते। ऐसे व्यक्ति को मदद दे, शक्ति देकर ऊपर उठाना आवश्यक है।

परतन्त्रता को लेकर गैरसमझ

अनुशासन में चलना, सर्व के साथ मिलकर चलना, संगठन के कल्याण को देखते स्वयं को विभिन्न बातों में मोल्ड कर लेना, अन्य की बातों का,

विचारों का आदर करना, सुनना, मानना, यह कोई परतन्त्रता नहीं, यह तो बुद्धिमानी है। संगठन में अन्य की राय व मत को सम्मान देकर संगठन के किले को मजबूत करने में सहभागी बनना अधीनता नहीं है।

परिवर्तन और परतन्त्रता

सबसे बड़ी परतन्त्रता व्यक्ति महसूस करता है स्वयं में परिवर्तन लाने में। वह स्वयं को शक्तिहीन, खाली, नाउमीद महसूस करता है। परिवर्तन न हो सकने के बहानों की लंबी सूची है। महात्मा गांधीजी ने कहा है, Be the Change that you wish to see in the world. अधीनता को तोड़ने के लिए हमें आत्मबल चाहिए। पराधीनता के कारण कोई न कोई भूल होती है। अंदर से नहीं करना चाहते हैं पर संस्कारवश कर लेते, फिर पश्चाताप होता। फिर मजबूरी से परिवर्तन करना पड़ता है।

पर-निर्भरता से

स्व-निर्भरता की ओर

आजकल शारीरिक, मानसिक

रूप से अस्वस्थ व्यक्तियों को भी विभिन्न कार्य सिखाते हैं ताकि वे आत्मनिर्भर बन रोज़ का खर्च चला सकें। परमात्मा से योग लगाकर आत्मिक शक्ति को उजागर करके हम पराधीनता रूपी ज़ंजीर को तोड़ सकते हैं। परमात्मा मजबूर नहीं, मजबूत बनाते हैं। एक पिता अपने बच्चे को कभी किसी परिस्थिति में हारता हुआ देखना नहीं चाहता। परमात्मा सर्व आत्माओं के पिता होने के नाते हमें आत्मनिर्भर बनाते हैं जो आत्मा की भरपूरता है। वे सागर हैं गुण, शक्तियों के। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के युवा प्रभाग ने वर्ष 2006 में 11,393 युवाओं का सर्वे किया जिनमें से 1187 युवा शराब पीते थे, एक साल के राजयोग के अभ्यास से 1182 युवाओं ने शराब छोड़ी। राजयोग के अभ्यास से व्यक्ति पराधीनता को छोड़ खुले आकाश में उड़ सकता है। आपको भी ऐसी उड़ान भरने का सादर निमंत्रण है।



आवश्यकता है

आर्मी, एअर फोर्स, नेवी या बी.एस.एफ.से

अवकाश प्राप्त जे.सी. ओज. की ग्लोबल हॉस्पिटल, माउण्ट आबू में

सुरक्षा विभाग और ट्रान्सपोर्ट विभाग में सेवा हेतु आवश्यकता है।

संपर्क करें : 9413375360

बायोडाटा भेजने के लिए ईमेल – ghrchrd@ymail.com